Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

बाबू जगजीवन राम : सामाजिक न्याय के पुरोधा

डॉ. रामशंकर
शोध अधिकारी, बाबू जगजीवन राम पीठ

प्रो. (डॉ.) शैलेन्द्र मणि त्रिपाठी
आचार्य, बाबू जगजीवन राम पीठ

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू

सारांश

जगजीवन राम, जिन्हें बाबूजी के नाम से जाना जाता है, एक राष्ट्रीय नेता, एक स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक न्याय के योद्धा, दलित वर्गों के एक चैंपियन, एक उत्कृष्ट सांसद, एक सच्चे लोकतंत्रवादी, एक प्रतिष्ठित केंद्रीय मंत्री, एक सक्षम प्रशासक और एक असाधारण प्रतिभाशाली वक्ता थे। उनका एक विशाल व्यक्तित्व था और उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रतिबद्धता, समर्पण और भक्ति के साथ आधी सदी से अधिक समय तक लंबी पारी खेली। बाबूजी का विवाह जून 1935 में इंद्राणी देवी से हुआ था। इंद्राणी देवी स्वयं एक स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद् थीं। उनके पिता डॉ. बीरबल, एक प्रसिद्ध चिकित्सक, ब्रिटिश सेना में थे और 1889-90 में चिन-लुशाई युद्ध में उनकी सेवाओं के लिए तत्कालीन वायसराय, लॉर्ड लैंसडाउन द्वारा विक्टोरिया मेडल से सम्मानित किया गया था। उनके घर 17 जुलाई 1938 को एक पुत्र सुरेश कुमार और 31 मार्च 1945 को एक पुत्री मीरा का जन्म हुआ। सुरेश कुमार का निधन 21 मई 1985 को हुआ और उनके माता-पिता का हृदय टूट गया।

जगजीवन राम का जन्म 5 अप्रैल 1908 को बिहार के शाहाबाद जिले के एक छोटे से गांव चंदवा में शोभि राम और वसंती देवी के घर हुआ था। जगजीवन राम ने अपने पिता, जो एक धार्मिक स्वभाव के थे और शिव नारायणी संप्रदाय के महंत थे, से अपने आदर्शवाद, मानवीय मूल्यों और लचीलापन को आत्मसात किया। वह अभी भी स्कूल में था जब उसके पिता का निधन हो गया और वह अपनी माँ की देखभाल में युवा जगजीवन को छोड़कर चला गया। अपनी मां के मार्गदर्शन में, जगजीवन राम ने आरा टाउन स्कूल से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक पास किया। जाति आधारित भेदभाव का सामना करने के बावजूद, जगजीवन राम ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इंटर साइंस की परीक्षा सफलतापूर्वक पूरी की और बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

जगजीवन राम ने कई रविदास सम्मेलनों का आयोजन किया था और कलकत्ता (कोलकाता) के विभिन्न क्षेत्रों में गुरु रविदास जयंती मनाई थी। 1934 में, उन्होंने कलकत्ता में अखिल भारतीय रविदास महासभा और अखिल भारतीय दलित वर्ग लीग की स्थापना की। इन संगठनों के माध्यम से उन्होंने दलित वर्गों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल किया। उनका विचार था कि दलित नेताओं को न केवल सामाजिक सुधारों के लिए लड़ना चाहिए, बल्कि राजनीतिक प्रतिनिधित्व की भी मांग करनी चाहिए। अगले साल, यानी 19 अक्टूबर 1935

The Asian Thinker

को, बाबूजी रांची में हैमंड आयोग के सामने पेश हुए और पहली बार दलितों के लिए मतदान के अधिकार की मांग की।

बाबू जगजीवन राम ने स्वतंत्रता संग्राम में बहुत सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीजी से प्रेरित होकर, बाबूजी ने 10 दिसंबर 1940 को गिरफ्तारी दी। अपनी रिहाई के बाद, उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन और सत्याग्रह में खुद को गहराई से स्थापित किया। 19 अगस्त 1942 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा शुरू किए गए भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए बाबूजी को फिर से गिरफ्तार कर लिया गया।

बाबूजी का पांच दशकों से अधिक का लंबा और प्रतिष्ठित राजनीतिक जीवन रहा है। एक छात्र कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत करते हुए, वह वर्ष 1936 में 28 वर्ष की छोटी उम्र में बिहार विधान परिषद के मनोनीत सदस्य के रूप में विधायक बन गए। फिर 1936 में वे डिप्रेस्ड क्लासेज लीग के उम्मीदवार के रूप में खड़े हुए। उन्हें 10 दिसंबर 1936 को पूर्वी मध्य शाहाबाद (ग्रामीण) निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया था। जब 1937 में कांग्रेस की सरकार बनी, तो बाबूजी को शिक्षा और विकास मंत्रालय में संसदीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। हालाँकि, 1938 में, उन्होंने पूरे मंत्रिमंडल के साथ इस्तीफा दे दिया।

जगजीवन राम 1946 में फिर से निर्विरोध चुने गए और 2 सितंबर 1946 को उन्हें अंतरिम सरकार में श्रम मंत्री के रूप में शामिल किया गया। इसके बाद, वह लगभग 31 वर्षों तक केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य बने रहे। 1937 से ही, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक प्रमुख भूमिका निभाई। स्वतंत्रता-पूर्व अवधि के दौरान, बाबूजी ने कांग्रेस पार्टी में राज्य स्तर पर महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। स्वतंत्रता के बाद, वे पार्टी की धुरी बन गए और पार्टी के मामलों के साथ-साथ देश के शासन के लिए अपरिहार्य हो गए। वे 1940 से 1977 तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे और 1948 से 1977 तक कांग्रेस कार्यसमिति में थे। वे 1950 से 1977 तक केंद्रीय संसदीय बोर्ड में थे। अपने चतुर राजनीतिक कौशल के कारण, वे दिग्गजों के प्रिय थे। जैसे पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती। इंदिरा गांधी।

समानता के संदेश को पीछे छोड़ते हुए बाबूजी ने 6 जुलाई 1986 को नई दिल्ली में अंतिम सांस ली। महात्मा गांधी से लेकर राजीव गांधी तक कई पीढ़ियों के साथ अपने राजनीतिक जीवन को साझा करने वाले एक राष्ट्रीय नेता के रूप में, उन्होंने एक ईमानदार और समर्पित राजनीतिक नेता, एक प्रतिबद्ध लोक सेवक, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, क्रांतिकारी और सच्चे मानवतावादी की विरासत छोड़ी है।

बाबू जगजीवन राम को केंद्रीय विधानमंडल के सदस्य के रूप में चार दशकों से अधिक समय तक निर्बाध रूप से सेवा करने का अनूठा गौरव प्राप्त था। अपनी अंतिम सांस तक, वह पहले आम चुनाव के बाद से लगातार आठवीं बार लोकसभा के सदस्य थे। बाबूजी को भारत सरकार में सबसे लंबे समय तक मंत्री रहने का गौरव प्राप्त है। जगजीवन राम को संसदीय कार्य के उचित संचालन के लिए जाना जाता था। उनके वक्तृत्व

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

कौशल को संसद में सराहा और सराहा गया। केंद्रीय मंत्री के रूप में, उन्होंने लोकसभा में कई विधेयक पेश किए और संसद में उनके पारित होने का संचालन किया।

स्वतंत्रता के बाद के भारत में, राष्ट्र निर्माण में बाबूजी के योगदान ने एक अमिट छाप छोड़ी है। वह 1946-52 के दौरान श्रम मंत्री थे, एक पोर्टफोलियो जो उन्होंने 1966-67 में फिर से संभाला। श्रम मंत्रालय के अलावा, उनके पास अन्य मंत्रालय संचार (1952-56), रेलवे (1956-62), परिवहन और संचार (1962-63), खाद्य और कृषि (1967-70), रक्षा (1970-74) थे। और कृषि और सिंचाई (1974-77)। जब 1977 में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी, तो जगजीवन राम ने रक्षा विभाग संभालते हुए कैबिनेट मंत्री के रूप में इसमें शामिल हो गए। वह उप प्रधान मंत्री भी बने और 24 जनवरी 1979 से 28 जुलाई 1979 तक रक्षा विभाग को संभाला।

श्रम मंत्री के रूप में, उन्होंने श्रम कल्याण के लिए समय-परीक्षणित नीतियों और कानूनों की शुरुआत की। उन्होंने श्रम के लिए कुछ ऐतिहासिक विधानों को अधिनियमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जैसे। औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947; न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948; भारतीय ट्रेड यूनियन (संशोधन) अधिनियम, 1960; बोनस भुगतान अधिनियम, 1965, आदि। उन्होंने दो महत्वपूर्ण अधिनियमों, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 और भविष्य निधि अधिनियम, 1952 को अधिनियमित करके सामाजिक सुरक्षा की नींव रखी।

संचार मंत्री के रूप में, उन्होंने निजी एयरलाइनों का राष्ट्रीयकरण किया और दूरदराज के गांवों में डाक सुविधाओं का प्रसार किया। बाबूजी, परिवहन और संचार मंत्रालय के पोर्टफोलियो को धारण करते हुए, वायु निगम अधिनियम, 1953 को लागू करने में सफल रहे, जिसने नागरिक उड्डयन क्षेत्र को काफी हद तक मजबूत किया और परिणामस्वरूप एयर इंडिया और इंडियन एयरलाइंस की उत्पत्ति एक राष्ट्रीय हवाई वाहक के रूप में हुई। नौवहन क्षेत्र की विशाल क्षमता को महसूस करते हुए, जगजीवन राम ने दुनिया के सभी महत्वपूर्ण व्यापार मार्गों को कवर करने के लिए अपने बेड़े के विस्तार पर जोर दिया, जिसके परिणामस्वरूप कुल कार्गो शिपमेंट में पर्याप्त वृद्धि हुई और बदले में विदेशी व्यापार को बढ़ावा मिला। विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि।

रेल मंत्री के रूप में, उन्होंने रेलवे का आधुनिकीकरण किया और रेल कर्मचारियों के लिए असंख्य कल्याणकारी उपाय किए और पांच साल तक यात्री किराए में किसी भी तरह की वृद्धि की अनुमति न देकर एक कीर्तिमान स्थापित किया। गौरतलब है कि बाबूजी के रेल मंत्री के कार्यकाल में ब्रह्मपुत्र पुल का निर्माण किया गया था, जो इंजीनियरिंग उत्कृष्टता का एक अनूठा उदाहरण है। पुल के निर्माण के साथ, असम और अन्य पूर्वोत्तर सीमावर्ती राज्य देश की मुख्य भूमि से जुड़ गए और इसने उस क्षेत्र के पूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त किया। राष्ट्रीय एकता और एकीकरण का एक महत्वपूर्ण साधन होने के अलावा, पूर्वोत्तर सीमावर्ती

The Asian Thinker

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

राज्यों द्वारा सामना की जा रही सुरक्षा संबंधी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, इस पुल का सामरिक महत्व और भी बढ़ गया। यह बाबूजी की दूरदर्शिता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

खाद्य और कृषि मंत्री के रूप में, उन्होंने देश को भीषण सूखे के चंगुल से बाहर निकाला, हरित क्रांति की शुरुआत की और पहली बार भारत को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली का भी आयोजन किया कि जनता को उचित मूल्य पर भोजन उपलब्ध कराया जाए।

रक्षा मंत्री के रूप में बाबू जगजीवन राम के प्रेरक नेतृत्व ने पूरे देश और सशस्त्र बलों को पूर्वी पाकिस्तान में संकट से निपटने के लिए प्रेरित किया। यह वास्तव में अद्वितीय वीरता की गाथा थी, क्योंकि पाकिस्तानी सेना के लगभग एक लाख सैनिकों ने भारतीय सेना के सामने अपने हथियार डाल दिए थे। वास्तव में एक नए राष्ट्र के निर्माण से, बांग्लादेश ने दक्षिण एशियाई क्षेत्र की भू-राजनीति में एक नया मोड़ ला दिया। 1971 की ऐतिहासिक और निर्णायक जीत बाबूजी के आत्मविश्वास, धैर्य और अपार साहस की गवाही देती है। रक्षा मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान ही भारत ने शांति, मित्रता और सहयोग की भारत-सोवियत संधि में प्रवेश किया।

बाबू जगजीवन राम दलित वर्गों के लिए दावे, समानता और सशक्तिकरण के एक नए युग की शुरुआत के प्रतीक थे। संविधान सभा के सदस्य के रूप में, उन्होंने सार्वजनिक रोजगार में आरक्षण और अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों के आरक्षण के माध्यम से सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों की उन्नति के लिए राज्य के हस्तक्षेप के प्रावधान को तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभाई। नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। उनके अटूट समर्थन और दलितों के लिए अथक संघर्ष के लिए, उन्हें सही मायने में 'दलितों का मसीहा' कहा गया है।

बाबू जी दलितों के साथ हो रहे भेद-भाव से पीड़ित थे। उनका कहना था की दलितों की समस्याओं का कोई साथै हल तात्कालिक रूप में नहीं हो सकता है। यह समस्या केवल तभी हल हो सकती है जब तक हमारे दिल दिमाग में इनके प्रति नफरत नहीं निकल जाती है। वह हमेशा अपने समाज के लोगों के बारें में ही सोचते थे। उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक चेतना का विस्तार किस प्रकार किया जाय उनके मन-मस्तिष्क में हमेशा यही चलता रहता था। बाबू जी शिक्षा पर बहुत ज़ोर देते थे जिससे दलित वर्ग के लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सके। बाबू जगजीवन राम की हिंदी साहित्य पर अच्छी पकड़ थी, उनकी ही प्रेरणा से भारतीय दलित साहित्य अकादमी की प्रेरणा से हजारों की संख्या में आज दलित लेखक, कवि, पत्रकार आगे बढ़ रहे हैं। बाबू जी ने हमेशा समतामूलक समाज की स्थापना की बात की इसलिए बाबू जी के जन्मदिन 5 अप्रैल को ‘ समता दिवस’ के रूप में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। उनकी नज़र में दलितों के उत्थान

The Asian Thinker

हेतु किया गया आरक्षण समतामूलक ही तो है। बाबू जी हमेशा जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। अंतत: सोये हुये समाज को जगाने वाला महापुरुष खुद 6 जुलाई 1988 को सो गया।

निष्कर्ष

बाबू जी समता समरसता तथा सामाजिक न्याय के वाहक थे उन्होंने समाज के सभी वर्गों के लिए कार्य किया। भारतीय सनातन व्यवस्था में उनका अटूट विश्वास था। उनका मानना था कि एक न एक दिन रूढ़ियाँ ख़त्म होंगी और देश विश्वगुरु के रूप में स्थापित होगा। बाबू जगजीवन राम एक कर्मठ स्वतंत्रता सेनानी, लोकप्रिय राजनेता, उत्कृष्ट सासंद, सामाजिक न्याय की लड़ाई के संघर्षशील योद्धा थे आज सत्ता में दलित वर्ग की भागीदारी में वृद्धि जरूर हुई है लेकिन, जाति आधारित भेदभाव, हिंसा, घृणा तथा जाति पर केंद्रित राजनीति से हमारा देश आज भी ग्रसित है। ऐसी परिस्थिति में देश के राजनेताओं, प्रशासकों तथा नागरिकों को एक बार फिर से बाबू जगजीवन राम द्वारा व्यवहार में लाए गए 'समानता' और 'समरसता' जैसे आदर्शों तथा जीवन-मूल्यों को अपनाने की आवश्यकता है ताकि, हमारा समाज और देश सही मायनों में लोकतांत्रिक देश के रूप में प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके।

सन्दर्भ

पासवान, डॉ. संजय.(2012). राष्ट्रनिष्ठ बाबू जगजीवन राम. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स.

आलम, डॉ. मो. खुर्शिद. (2019). *दलितों के उत्थान में बाबू जगजीवन राम का योगदान*. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन.

कमल, एम.पी. (2016). *बाबू जगजीवन राम*. दिल्ली : राजा पॉकेट बुक्स.

मंगलमूर्ति. (2010). *बाबू जगजीवन राम : एक जीवनी*. नई दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.

मौर्य, ओमप्रकाश. (1997). आधुनिक भारत के निर्माता बाबू जगजीवन राम. नई दिल्ली. प्रकाशन विभाग. पृ.1

प्रसाद, डॉ. माता. (2006). भारत में सामाजिक क्रांति के प्रेरणास्रोत.नई दिल्ली. सम्यक प्रकाशन. पृ. 154

विद्रोही एम.आर.(2004). दलित दस्तावेज़. नई दिल्ली. सम्यक प्रकाशन. पृ. 238

अंबेडकर इन इंडिया, जुलाई 2014. संपादक दया नाथ निगम. पृ. 25

यादव, डॉ. वीरेंद्र सिंह.(2009). दलित विमर्श के विविध आयाम. दिल्ली. निर्मल पब्लिकेशन्स. पृ. 11

The Asian Thinker